*नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त*

**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha**

*(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)*

**जनसंपर्क विभाग-** Ph./Fax: **07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल:** mgahvpro@gmail.com

ज्ञान शांति मैत्री

**वेबसाइट :** www.hindivishwa.org

# राइटर-इन-रेजीडेंस डॉ. दामोदर खड़से, बुद्धिनाथ मिश्र का किया सम्मान

## सृजनात्मकता को देंगे बढ़ावा – कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा, 3 सितंबर 2016: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो.

गिरीश्वर मिश्र ने शुक्रवार को विवि के राइटर-इन-रेजीडेंस डॉ. दामोदर खड़से और बुद्धिनाथ

मिश्र के विदाई एवं सम्मान समारोह में कहा कि विश्वविद्यालय हर प्रकार की सृजनात्मकता

को बढ़ावा देने के लिए अपने यहां लेखक, कवि, साहित्यकार एवं विचारकों को आमंत्रित

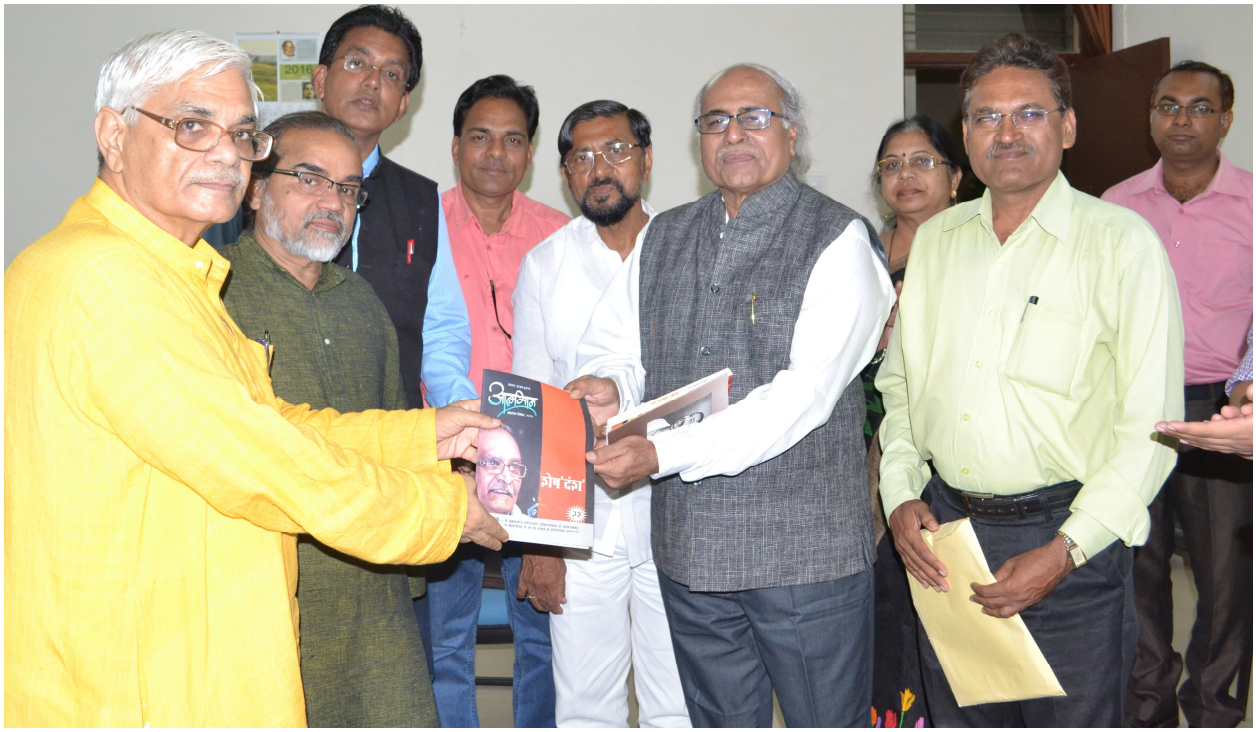

करता रहेगा। उन्होंने कहा कि अब तक यहां आए अतिथि लेखकों के लेखन का संकलन विश्वविद्यालय करेगा।

शुक्रवार को साहित्य विद्यापीठ के सभागार में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कलमकारों डॉ. दामोदर खड़से एवं बुद्धिनाथ मिश्र को चरखा, शॉल एवं सूत की माला प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में मंच पर प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, पूर्व प्रतिकुलपति प्रो. ए.

अरविंदाक्षन, डॉ. दामोदर खड़से, बुद्धिनाथ मिश्र, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, अतिथि लेखक एवं पत्रकार अरविंद मोहन उपस्थित थे। विविद हो कि विश्वविद्यालय अपनी एक योजना के तहत सृजनात्मक कार्य करने वाले लेखक, कवि, साहित्यकार एवं विचारकों को अपने यहां निमंत्रित करता है और उन्हें यहां सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्य करने का मौका देता है। इसी योजना के तहत डॉ. खडसे पिछले जून से विश्वविद्यालय में आए थे।

अपने वक्तव्य में डॉ. खड़से ने कहा कि विश्वविद्यालय के वातावरण में मुझे वर्तमान समाज को रेखांकित करने का मौका मिला। मुझे विश्वविद्यालय ने दो वर्ष पूर्व 'हिंदी सेवी

सम्मान' प्रदान किया था, उस समय मैं यहां आया था। तब मुझे लगा था कि काश मैं यहां और कुछ दिनों के लिए रह कर यहां कुछ सृजनात्मक लेखक करता। विश्वविद्यालय ने मुझे राइटर-इन-रेजीडेंस के रूप में बुलाकर मेरी वह तमन्ना पूरी कर दी। वर्धा के तीन महीने के निवास पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यहां का निवास अत्यंत भावनात्मक रहा। यहां विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले विभूतियों से मिलना एक अनोखा अनुभव रहा। अपना रिपोर्ट कार्ड पेश करते हुए उन्होंने कहा कि अनेक पुस्तकों की समीक्षा, आलेख और संस्मरणों के साथ 'खिड़की' नामक उपन्यास का सृजन तीन महीनों में किया। उन्होंने कहा कि यहां की आबोहवा ने मुझे और

लिखने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के प्रति आभार जताते हुए कहा कि अकादमिक एवं प्रशासनिक स्तर पर कुलपति के दृष्टिकोण एवं संकल्पसे मैं अभिभूत हूं। वे जिस प्रकार विश्वविद्यालय की समजोन्मुखी अवधारणा को देखते है और उसी दिशा में उस पर अमल भी करते हैं वह काबिले तारिफ है। इस मौके पर उन्होंने अपनी दो कविताएं भी प्रस्तुत की।

कवि बुद्धिनाथ मिश्र ने पिछले सात महीनों के निवास पर कहा कि यहां के आत्मीयता

के वातावरण ने मुझे प्रभावित किया। यहां रहते 56 निबंधों का एक संग्रह तैयार किया और प्रयोजनमूलक हिंदी को लेकर कार्य को आगे बढ़ाया। समारोह में स्वागत वक्तव्य प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने दिया। साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि दोनों साहित्यकारों के सानिध्य तथा उनकी रचनाशीलता से अध्यापक एवं विद्यार्थी समृद्ध हुए। पूर्व प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन ने अपनी टिप्पणी देते हुए कहा कि रचनाकारों से

मिलना एक पूण्य अवसर रहा और उनके आचार-विचारों का माधुर्य मनोमंडल में हमेशा गूंजता रहेगा।

इस अवसर पर पत्रकार राजेंद्र मुंढे द्वारा तुकडोजी महाराज की पुस्तक एवं आत्मभान पत्रिका डॉ. खड़से को भेंट की। कार्यक्रम का संचालन अनुवाद अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने किया तथा आभार जनसंपर्क अधिकारी बी.एस. मिरगे ने माना। कार्यक्रम में विवि के डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. आर.पी. यादव, डॉ. अवंतिका शुक्ला, संदीप सपकाले, शैलेश मरजी कदम, हिमांशु शेखर, राजेश लेहकपुरे, उमाकांत चौबे वर्धा के समाजसेवी प्रदीप दाते, लॉयन्स क्लब की पदाधिकारी रंजना दाते, पत्रकार राजेंद्र मुंढे आदि सहित विवि के शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।